सारंग राग

या कुन्देन्दु तुषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावर दण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना॥
या ब्रह्माच्युतशंकर प्रभृतिभिर्देवैःसदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

डॉ० अनुराधा प्रियदर्शिनी

सारंग राग

A Vedic Publication Book
UDYAM-UK-06-0031825

All rights reserved.
Copyright © 2025 by डॉ० अनुराधा प्रियदर्शिनी

No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form without the prior written permission of the publisher, except in the case of brief quotations embodied in critical reviews and certain other noncommercial uses permitted by copyright law.

The opinions/contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ stands/ thoughts of The Vedic Publication.

Contact info:-
vedicpublication@gmail.com
वैदिक प्रकाशन, गंगा विहार, भूपतवाला, हरिद्वार उत्तराखंड
☏ 7007470800
☏ 8076419711

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

आमुख

धैर्य, संयम और साहस जैसे जीवन को सुदृढ़ता और सम्पन्नता प्रदान करने वाले गुणों, प्रकृति, प्रेम एवं सौंदर्य जैसी विशिष्टताओं, मानव-समानता जैसी स्वाभाविक सत्यता, पृथ्वीमाता की महिमा, देशप्रेम, आध्यात्मिकता से जुड़े विषयों को समेटती डॉ0 अनुराधा प्रियदर्शिनी का काव्य-संकलन 'सारंग राग', वास्तव में, एक समयानुकूल, प्रेरणादायक और हृदयस्पर्शी कार्य है। इस कृति में सम्मिलित सभी इकसठ रचनाएँ राष्ट्रभाषा हिन्दी को समृद्ध करने के साथ ही, विदुषी प्रियदर्शिनी के काव्य-जगत में उच्च स्थान को भी सुनिश्चित करती है।

श्रद्धा, सकारात्मकता और सर्वकल्याण हेतु प्रतिबद्धता के साथ ही 'नूतनैरुत' (ऋग्वेद, 01:02), अर्थात्, समय और परिस्थितियों की मांग के अनुसार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निरन्तर नया करना, भारतीय ज्ञान-परम्परा के साथ अभिन्नतः सम्बद्ध पक्ष है। सजातीय सहयोग, सामन्जस्य और सौहार्द के वातावरण में, मिलकर बाधाओं को पार करते हुए, मानव-जाति आगे बढ़े, इस परम्परा का यह प्रमुख सन्देश भी है। व्यक्तित्व का चहुँमुखी विकास और उसके बल पर विश्व-कल्याणार्थ मानव के योगदान की सुनिश्चितता लक्ष्य है। यह भारतीय ज्ञान-परम्परा को अति उत्कृष्ट बनाती है; साथ ही, समस्त संसार का इसके अनुकरण का आह्वान करती है।

'सारंग राग' में आध्यात्मिकता है। सनातन मूल्यों का पुट है। सौंदर्य और प्रेम है। ज्ञान-विवेक की झलक है। नूतनता है। इन सब की उपस्थिति में डॉ0 प्रियदर्शिनी की यह काव्यकृति विशिष्ट बन जाती है जो हृदय की गहराई तक उतर जाती है।

मुझे यह पूर्ण आशा है कि यह कृति पाठकों का भरपूर प्रेम अर्जित करेगी। उनमें से अनेक को प्रेरित भी करेगी। उनके लिए एक मार्गदर्शिका के रूप में कार्य करेगी। डॉ0 अनुराधा प्रियदर्शिनी को इस काव्यकृति के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ0 रवीन्द्र कुमार
मेरठ (उत्तर प्रदेश)
17 फरवरी, 2026 ईसवीं।
(सम्मानित पद्म श्री एवं पूर्व कुलपति,
मेरठ विश्वविद्यालय)

~ ~ ~

झरोखे से

'सारंग राग' काव्य-संग्रह अत्यंत भावसमृद्ध, विचारोत्तेजक तथा बहुआयामी कृति है। इस संग्रह में जीवन-दर्शन, प्रकृति-सौंदर्य, प्रेम, मानवीय संबंधों की ऊष्मा, राष्ट्रभक्ति तथा पर्यावरण जागरूकता जैसे विविध आयाम अत्यंत स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे में गुँथे हुए हैं। यह कृति केवल काव्यात्मक सौंदर्य का आस्वाद ही नहीं कराती, अपितु पाठक को एक नैतिक एवं आध्यात्मिक यात्रा पर भी ले जाती है, जहाँ वह आत्मचिंतन हेतु प्रेरित होता है।

काव्य-संग्रह के आरंभिक भावों में ही धैर्य, संकल्प और निरंतर कर्म के महत्त्व को अत्यंत प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया गया।

'हृदय रख धैर्य जब बढ़ते,
नवल प्रतिमान नित गढ़ते।'

उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि जीवन में स्थिरता और लक्ष्यनिष्ठा सफलता का मूल आधार है। 'ध्रुव' जैसे प्रतीक का प्रयोग इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय है, जो अटलता और दृढ़ता का बोध कराता है। यह अंश पाठक को आत्मबल एवं निरंतर प्रयत्न की प्रेरणा प्रदान करता है।

'गगन झुकता, चरण रखता, नमन धरणी' जैसी पंक्तियाँ प्रकृति और मानव के मध्य एक गहन आध्यात्मिक संबंध स्थापित करती हैं। 'धवल सरिता', 'चमन', 'सुमन', 'मधुप' तथा 'कोकिला' जैसे बिंबों

का सजीव एवं चित्रात्मक प्रयोग संवेदनशील दृष्टि और प्रकृति के प्रति मनवीय अनुराग को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करता है। यह चित्रपट के साथ -साथ आत्मीय संवाद स्थापित करने के लिए भी प्रेरित करता है।

काव्य संग्रह का एक महत्वपूर्ण पक्ष है-प्रेम एवं मानवीय संबंधों की व्याख्या । 'सोना-चाँदी से क्या मतलब, प्रीति-प्रेम का धन जब बरसे' जैसी पंक्तियाँ भौतिकवाद के प्रति एक स्पष्ट प्रतिरोध प्रस्तुत करती हैं। वास्तविक समृद्धि प्रेम, स्नेह और आत्मीयता में निहित है। 'दिल से दिल का रिश्ता' तथा 'इत्र-सी खुशबू' जैसे उपमान संबंधों की मधुरता, स्थायित्व और सौंदर्य को अत्यंत मार्मिक रूप में प्रस्तुत करते हैं,जो मानवीय संवेदनाओं को गहराई से स्पर्श करता है।

'नदी सरीखा आगे बढ़ना, पर्वत-काँटों से कब घबराना'जैसी पंक्तियाँ ऐसे मानव जीवन को सतत प्रवाह के रूप में प्रस्तुत करती हैं, जो बाधाओं से विचलित हुए बिना आगे बढ़ता रहता है। 'दीपक' का रूपक 'धीरे-धीरे जलता दीपक, अँधियारे से हर पल लड़ता' आत्मसंघर्ष, आशा और प्रकाश का ऐसा सशक्त प्रतीक है जो विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य और सकारात्मकता बनाए रखने का संदेश देता है।

ग्रामीण जीवन और भारतीय कृषि-संस्कृति का चित्रण भी अत्यंत सजीव एवं हृदयस्पर्शी है। 'खेतों में जो फ़सल पकती, स्वर्ण-सी है लुभाती' जैसी पंक्तियाँ कृषक जीवन की गरिमा और उसकी उपयोगिता को रेखांकित करती हैं। 'मिट्टी में कनक' तथा 'कोकिला

का तराना' जैसे बिंब भारतीय ग्राम्य जीवन की सौंदर्यपूर्ण झाँकी प्रस्तुत करते हैं। यह भारतीय संस्कृति की जड़ों से गहरे जुड़ाव का परिचायक है।

राष्ट्रभक्ति का स्वर भी इस काव्य-संग्रह में अत्यंत प्रखर रूप में अभिव्यक्त हुआ है। 'आओ सारे, मिलजुल रहें, भारती को सँवारें' जैसी पंक्तियाँ एकता, भाईचारे और सामूहिक उत्तरदायित्व का संदेश देती हैं। 'झण्डा ऊँचा गगन फहरा' तथा 'गूँजे गगन भर में एकता का तराना' जैसे कथन पाठक के मन में राष्ट्रगौरव एवं आत्मसम्मान की उस भावना को जागृत करते हैं जो सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय चेतना का सशक्त वाहक है।

काव्य संग्रह में पर्यावरण संरक्षण की उपादेयता को अत्यंत सार्थक रूप से प्रस्तुत किया गया है। 'पर्यावरण बचाना, हम सबका कर्तव्य' जैसी पंक्तियाँ वर्तमान समय की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।नीम और आम लगाना,जल का संरक्षण तथा हरे-भरे जंगल जैसे संकेत प्रकृति के संरक्षण हेतु सामूहिक प्रयासों की समकालीन आवश्यकता को स्पष्ट करते हैं।

भाषा की दृष्टि से यह काव्य-संग्रह अत्यंत सरल, सहज तथा प्रवाहपूर्ण है। ब्रजभाषा और खड़ी बोली का संतुलित मिश्रण इसकी अभिव्यक्ति को और अधिक मधुर एवं प्रभावी बनाता है। उपमा, रूपक और अनुप्रास जैसे अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक एवं संतुलित है, जो काव्य को सौंदर्य एवं गरिमा प्रदान करता है। यद्यपि छंदों का पूर्णतः शास्त्रीय अनुशासन सर्वत्र नहीं है, तथापि समग्र

रचना में लयात्मकता बनी रहती है, जिससे पाठन सुखद हो उठता है।

समग्रतः 'सारंग राग' एक सकारात्मक, प्रेरणादायक एवं जीवन-मूल्यों से अनुप्राणित काव्य-संग्रह है। यह कृति पाठक को न केवल सौंदर्य-बोध कराती है, अपितु उसे एक सजग, संवेदनशील और उत्तरदायी व्यक्ति बनने की दिशा में भी प्रेरित करती है। निस्संदेह, यह संग्रह समकालीन हिंदी काव्यधारा में महत्त्वपूर्ण एवं सार्थक योगदान के रूप में प्रतिष्ठित होने की क्षमता रखता है।

अतःऐसे काव्य संग्रह की रचना के लिए अनुराधा प्रियदर्शिनी जी की मुक्त कंठ से सराहना करता हूँ और साहित्य पथ पर निरंतर अग्रसर रहने की आशा और विश्वास धन्यवाद देता हूँ।

भूपेश प्रताप सिंह

सह- प्रबन्ध सम्पादक

दिल्ली

शुभकामनाएं

"दर्पण", "अलख गान", "अनुप्रिया स्वरांजलि" और "जीवनोत्कर्ष कहानियाँ" आदि पुस्तकें जिनकी प्रकाशित हो चुकी हैं, ऐसी विभिन्न विधाओं में अपना परचम फहराने वाली, स्वनामधन्य लेखिका डॉ. अनुराधा प्रियदर्शिनी जी, एक बार फिर से साहित्याकाश में अपने एक नवीन नक्षत्र "सारंग राग" को लेकर आ रही हैं।

स्वभाव से सरल, सहज, मृदुभाषिणी, सौम्य दर्शना, भारतीय संस्कारों की संवाहिका, जिस प्रवीणता और दक्षता से लिखती हैं, उतने ही मधुर स्वर से वे उन गीतों को गाती भी हैं। यूं तो माँ सरस्वती की कृपा मातृशक्ति पर वैसे ही बनी रहती है किन्तु अनुराधा जी पर माँ कुछ विशेष कृपादृष्टि रखती हैं। इसीलिए आपके लेखन और प्रस्तुतीकरण में मानवीय स्तरों से कहीं ऊपर की विशेषज्ञता दृष्टिगोचर होती है।

डॉ. अनुराधा प्रियदर्शिनी जी के अन्य प्रकाशनों से और भी परिपक्व यह पुस्तक शीघ्र ही आपके हाथों में उपलब्ध होगी। पुस्तक की समीक्षा तो प्रकाशन के बाद ही करना उचित रहेगा। अभी तो मैं इसके मील का पत्थर साबित होने की शुभकामनाएँ ही देता हूँ।

डा. अभि दा, पूर्व वरिष्ठ अधिकारी,
गीतकार, आध्यात्मिक वक्ता
(पूर्व ज्वाइंट सेक्रेटरी, उत्तर प्रदेश),
कुलपति, भागीरथी हिन्दी विद्यापीठ,
हरिद्वार (उत्तराखंड)
नई दिल्ली 110023

शुभकामना संदेश

"ॐ नमो भगवते" साहित्यजगत के लिए अत्यंत अनुपम प्रसन्नता की बात है, कि अध्यात्म साहित्य संगीत के उत्थान में अनवरत अविराम अनमोल योगदान दे रहे सुप्रतिष्ठापित गौरवशाली प्रकाशन संस्थान "वैदिक प्रकाशन" गंगा बिहार भूपतवाला हरिद्वार उत्तराखंड द्वारा राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त साहित्यशास्त्र की विदुषी परमसम्माननीया डॉ• अनुराधा प्रियदर्शिनी जी द्वारा लिखित पुस्तक "सारंग-राग" का प्रकाशन किया जा रहा है, पुस्तक के प्रकाशन से साहित्यजगत में पुस्तक के रूप में एक और सितारा टंक जाएगा, डॉ•अनुराधा प्रियदर्शिनी जी साहित्यविधा की मर्मज्ञ है, अद्‌भुत रचना शैली की कवियित्री हैं, आसु कवि के समस्त लक्षण इनमें समाहित है, परिस्थितियों को देखते ही ये अविलम्ब उस विषय पर गीत, रचना, कविता, लिख देती हैं, इनकी रचनाओं में अध्यात्म, वैराग्य, अनुराग, मिलन, विरह, त्याग, समर्पण, भावों का विद्वतापूर्ण मिश्रण रहता है, पूर्व में भी इनकी लिखी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिन्हें अत्यंत प्रशंसा प्राप्त हुई है, मथुरा-उत्तरप्रदेश की डॉ•अनुराधा प्रियदर्शिनी जी की साहित्यिक साधना निरन्तर अविराम गतिशील रहे, बारम्बार प्रभु से ये प्रार्थना करता हूँ, हम सब प्रियदर्शिनी जी की अग्रिम पुस्तक "सारंग-राग" की प्रतीक्षा कर रहे हैं, समस्त रचनाओं का मैंने गुनगुनाते हुए अध्यन किया, सभी रचनाओं में कवियित्री की

कठोर-साधना झलकती है, पुस्तक के नामकरण "सारंग-राग" से पुस्तक की शोभा बढ़गई है, पुनः पुनः हम प्रकाशन प्रतिष्ठान "वैदिक-प्रकाशन" और पुस्तक की लेखिका को सादर आदर सहित हर्षितहृदय से असीम शुभकामनाएं,

पद्मधर झा

रिटायर्ड गवर्मेंट चीफ़ आर्टिस्ट

[•मो•8109275008•]

~ ~ ~

लेखक की कलम से

"सारंग राग" माँ सरस्वती की विशेष अनुकम्पा और माता-पिता गुरूजनों के आशीर्वाद से एक पुस्तक का आकार ग्रहण कर रही हे जो मेरे अंतस हृदय की गहराइयों से उपजे काव्य रचनाओं का एक संग्रह है। सारंग राग में भक्ति, जीवन, प्रेम, प्रकृति से संबंधित मैंने अपनी कुल इकसठ रचनाओं को संकलित और एकत्रित किया है।

इस पुस्तक की भूमिका पद्म श्री से पुरस्कृत मेरठ विश्व विद्यालय के पुर्व कुलपति परम् आदरणीय डॉ रवीन्द्र कुमार सर ने लिखने की स्वीकृति प्रदान की जो मेरे लिए अत्यंत गौरव का विषय है।

इसको संकलित कर पुस्तक का आकार देने के लिए संगीत जगत के प्रकांड विद्वान आदरणीय गुरुदेव पद्मधर झा शर्मा जी ने मुझे लगातार प्रोत्साहित किया और इसमें संकलित ज्यादातर गीतों को अपने स्वर में प्रस्तुत किया है। जो मेरे लिए परम् सौभाग्य की बात है।

अपने गीतों में शब्दों का तालमेल बिठाना हो या भावों के प्रवाह को एक गति प्रदान करना इसके लिए मेरे मम्मी-पापा, भाई-बहन और दोस्तों के साथ ही अगर कोई महत्वपूर्ण है तो वो हैं मेरे जीवनसाथी श्री अरूण कुमार दुबे जिन्होने हर

कदम पर मेरा साथ दिया है और मेरे लेखन के सफर को सदैव प्रोत्साहित किया है।

सारंग राग के प्रकाशन के लिए वैदिक प्रकाशन के समस्त टीम के साथ ही आदरणीय प्रशस्ति सचदेव का विशेष आभार प्रकट करना चाहूँगी जिन्होंने मेरी इस सोच को एक खूबसूरत पुस्तक का आकार प्रदान किया।

अंत में मैं अपने समस्त पाठकों का विशेष आभार प्रकट करना चाहूँगी जिनकी पाठकीय प्रतिक्रिया मुझे लिखने के लिए प्रोत्साहित करती है। मुझे उम्मीद ही नहीं बल्कि पुर्ण विश्वास है कि मेरी यह कृति सारंग राग भी आपको निराश नहीं करेगी। पुर्व प्रकाशित कृतियों की भांति ही आपका स्नेह सारंग राग को भी प्राप्त होगा।

डॉ अनुराधा प्रियदर्शिनी
लेखक
सारंग राग

~ ~ ~

लेखिका परिचय
डॉ अनुराधा प्रियदर्शिनी

नाम- डॉ अनुराधा प्रियदर्शिनी (विद्या वाचस्पति)
पिता- श्री काली प्रसाद पाठक
माता- श्रीमती रमा पाठक
पति- श्री अरूण कुमार दुबे
जन्म तिथि - 20 अक्टूबर 1984
शिक्षा - M SC (जैव रसायन शास्त्र) ;BED ; BLIS
लेखन विधा - गीत, कविता, कहानी, लघुकथा।

प्रकाशित पुस्तकें -

१.दर्पण (लघुकथा संग्रह)
२.अलख गान (बाल काव्य संग्रह)
३.अनुप्रिया स्वरांजलि (काव्य संग्रह)
४.जीवनोत्कर्ष कहानियाँ (कहानी संग्रह)

पंद्रह से अधिक पुस्तकों का संपादन और संकलन।

प्रकाशन एवं प्रसारण:- नीलाम्बरा, साहित्य नामा, संगिनी, मानवी, लोकस, अविरल पत्रिका, युग जागरण एवं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित।

मथुरा आकाशवाणी पर प्रसारण -सितंबर 2024, जून2025

पुरस्कार:- श्री मौन तीर्थ हिंदी विद्यापीठ से "विद्या सागर" 2022

और विद्या वाचस्पति की उपाधि 2023.

अंतर्राष्ट्रीय महिला मंच द्वारा "उत्तर प्रदेश महिला रत्न सम्मान"।

गुफ्तगू साहित्यिक मंच से फ़िराक़ गोरखपुरी सम्मान।

गुफ्तगू साहित्यिक मंच से सीमा अपराजिता सम्मान 2023।

मधुकर शब्द सृजन सम्मान 2024

पं० हरप्रसाद पाठक बाल-साहित्य पुरस्कार 2025

विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंचों से प्राप्त सम्मान पत्र

संप्रति-ब्लागर, यूट्यूबर, स्वतंत्र लेखन, समाज सेवा, गृहणी।

मोबाइल 9935058297

एवं ईमेल - apinky2011@gmail.com

~ ~ ~

अनुक्रमणिका

1. गणपति वंदन 21

2. नमामि मातु शारदे 23

3. चरण वंदना 25

4. हे! अंबिका जगदंबिका 26

5. हृदय रख धैर्य जब बढ़ते 28

6. राम का सुमिरन करो 29

7. सोना चाँदी से क्या मतलब 31

8. रिश्ते नाते उनसे जुड़कर खुशियाँ पाते हैं 32

9. समता के हकदार यहाँ सब 33

10. दान करो 34

11. दीपक 36

12. तीर्थराज प्रयाग 37

13. मिला तभी सुराज 38

14. करूँ वंदना आरती 39

15. प्यार हमारा अमर रहेगा......................................41

16. बासंती सी पवन चलती......................................42

17. मन की नदी..43

18. स्नेह का दीप..44

19. जीवन के महाकाव्य का......................................45

20. गाता वसंत गीत..46

21. हृदय रख धैर्य जब बढ़ते......................................47

22. संध्या वंदन आरती..48

23. देश भक्ति गीत..49

24. करना पड़े उपाय...50

25. सावन प्यास जगाए..51

26. बूँदों की बौछार..52

27. भजन...53

28. परिमल प्रेम विधान..54

29. झूठे सब सपने...55

30. मानस पटल कोई है आया..................................56

31. कैसी बाधा...57

32. नव भोर 58

33. छा गया कोहरा 59

34. स्वर्णिम भोर 60

35. राधिका का हृदय 61

36. वसुंधरा 62

37. वंदना माँ भारती की 63

38. सोंधी सी खुशबू 64

39. सावन में 65

40. हे! विधाता 66

41. भूले तराने 67

42. राष्ट्रभाषा की माँग है हिन्दी 68

43. करो कुछ काम 69

44. पर्यावरण सुरक्षा 70

45. झूला 71

46. छोड़ा हमने जब गाँव को 72

47. जब भी कोई श्रृंगार करूँ 73

48. बदल रहा है जमाना 74

49. रक्षाबंधन 75
50. प्रिय की पाती 76
51. विदाई 77
52. पैसा बोलता है 79
53. राष्ट्र भाषा की अधिकारी हिंदी 80
54. स्वयं को जान लेना 81
55. मानव तन की महिमा 82
56. कंगाली 83
57. यह जीवन उपहार 84
58. मुझको दिया संवार 85
59. संतानों ने ऐश में 86
60. करवा चौथ 87
61. माघ माह के कुछ दोहे 88

~ ~ ~

गणपति वंदन

गणपति गणनायक, सब सुख दायक,
मंगल मूरत, विघ्न हरो।।
मोदक मनभावन, मूषक वाहन,
गज मुख धारण, स्वप्न धरो।।

सब सुख कारण, संकट हारण,
करूँ समर्पण, भाव भरो।।
देवा दुख भंजन, गौरा नंदन,
बुद्धि प्रदायक, पुष्प झरो।।

हे त्रिपुण्ड धारी, मूरत प्यारी,
ऋद्धि सिद्धि के, हो दाता।।
महिमा तुम्हारी, देव उचारी,
हो उपकारी, फलदाता।।

भक्तन हितकारी, हो सुखकारी,
तुम अविनाशी, हे देवा।
मम उर के वासी, तुम सुख रासी,
भोग चढ़ाऊँ, फल मेवा।।

शुभ मंगलकारी, तुम भंडारी,
ऋद्धि सिद्धि के, तुम दाता।
वर की याचना, करें साधना,
श्रद्धा पूजन, सुख पाता।।

मोदक मन भाता, भक्त चढ़ाता,
बुद्धि प्रदाता, गणराजा।
शिव शंकर प्यारे, गौरा दुलारे,
मूषक वाहन, महराजा।।

~ ~ ~

नमामि मातु शारदे

स्वरों की देवी तुम हो माँ,
नमामि मातु शारदे।
हमें विद्या का वर देना,
उदार हों विचार दे।।

हरो तम के अंधेरे को,
भरो प्रकाश ज्ञानदा।
तुझी से झंकृत जग सारा,
करो कृपा तु शारदा।।

भरो कविता में भावों को,
चले प्रवाह लेखनी।
मिले वर वीणा पाणी जो,
यहाँ किरण बिखेरनी।।

सभी करते तेरा पूजन,
तु कष्ट से उबार दे।
विराजो जिह्वा पर माता,
विमल बुद्धि विचार दे।।

विनत हो वाणी मेरी माँ,
रहे हृदय सुभावना।।
भरोसा तुझपे एक माता,
शरण तिहार प्रार्थना।।

मिटेंगे दुख सारे जब,
धवल स्वरूप वंदिता।
मनोवांछित फल देवे हैं,
प्रखर सदैव नंदिता।।

~ ~ ~

चरण वंदना

चरण वंदना देव कर मैं रहा हूँ।
शरण आपकी रात-दिन मैं गहा हूँ।।
हृदय कामना ताप बनके सताए।
भजन साधना नाम जप में लगा हूँ।।

नमन आपको नित्य कर मैं रहा हूँ।
वचन सिद्ध हों ये वरद चाहता हूँ।।
चमन में खिले पुष्प नित आप आओ।
कलम साधना उच्चतम चाहता हूँ।।

कलुष भावना का दहन चाहता हूँ।
भवन आपका वो हृदय चाहता हूँ।।
करम शुद्धता चाह मन में बसे वो।
सहज प्रेम की हो विजय चाहता हूँ।।

~ ~ ~

हे! अंबिका जगदंबिका

हे! अंबिका जगदंबिका माँ,
मात तुम अंबालिका।
त्रैलोक्य की आराधिका हो,
जगत की संचालिका।।

नवरात्रि का पावन दिवस है,
अंबिका आती धरा।
नौ रूप में पूजन यहाँ पर,
सौभाग्य से जीवन भरा।।

दिन-रात पूजन मात का हो,
द्वार तोरण से सजा।
नौ रात्रि माता अंबिका हैं,
धर्म की फहरे ध्वजा।।

हे! अंबिका कल्याण करना,
अश्रु भावों का चढ़ा।
चौकी सजा आह्वान तेरा,
हाथ अपना अब बढ़ा।।

नैना निहारे मात आती,
बालिका का रूप धर।
ऊँचे पहाड़ी से उतर,
द्वार आयी झोली भर।।

आशीष देकर माँ मुझे भी,
आप चरणों में धरो।
कर दो कृपा अब मात अंबे,
शक्ति मुझमें तुम भरो।।

~ ~ ~

हृदय रख धैर्य जब बढ़ते

हृदय रख धैर्य जब बढ़ते।
नवल प्रतिमान नित गढ़ते।।
सुफल सब काज तुम करते।
नखत नभ मध्य ध्रुव रहते।।

जगतपति गोद तब रखते।
सहज शुभ भाव जब झरते।
करम करते नयन बसते।
उदित सविता सृजन करते।।

गगन झुकता, चरण रखता।
नमन धरणी, नियत करता।।
चमन खुशबू, महक उठती।
धवल सरिता, सगर तरती।।

सुमन खिलते, सहज झरते।
मधुप बगिया, भ्रमण करते।।
कुहुक-पिक भी, चहक उठते।
हरित शुक आ, भजन करते।।

~ ~ ~

राम का सुमिरन करो

राजा अवध के राम जी हैं,
आगमन उनका हुआ।
दरबार उनका सज गया है,
तेज रवि का है छुआ।।

पालक हमारे राम ही हैं,
राम का सुमिरन करो।
सच्चे हृदय में राम रहते,
भक्ति रस से हिय भरो।।

जब भी किसी ने राम बोला,
राम को पाया निकट।
हनुमत हृदय में जो विराजे,
भक्त से जाते लिपट।।

पूरी हुई सब कामना जो,
राम से हमने कही।
आशीष उनका मिल रहा है,
प्रीत की नदिया बही।।

आसक्ति से तुम दूर होकर,
धाम को जाया करो।
आदर्श जीवन का दिये हैं,
भावना मन में धरो।।

सत्संग से जुड़ना भला है,
नाम की महिमा गुनो।
मोती मिला अनमोल गूंथों,
राम की गाथा सुनो।।

~ ~ ~

सोना चाँदी से क्या मतलब

सोना चाँदी से क्या मतलब।
प्रीति प्रेम का धन जब बरसे।।
दिल से दिल का रिश्ता जब है।
दौलत को हम कभीं न तरसे।।

रिश्तों को दिल से निभाते।
इत्र सी खुशबू सदा बिखेरें।।
दिल को जब भी हमने हारा।
कोहिनूर सी चमक बिखेरा।।

प्रेम रत्न अनमोल मिला है।
नींद सुकून की हमने पाया।।
सपनों का संसार सजा है।
हँसी ठिठोली साथी पाया।।

मिल बैठकर बातें करना।
उलझे धागों को सुलझाना।।
धरती अपनी अंबर अपना।
जीवन के रंग मे रंग जाना।।

नदी सरीखा आगे बढना।
पर्वत काँटों से कब घबराना।।
मंजिल को नित बढते जाना।
हँसी खुशी से गले लगाना।।

~ ~ ~

रिश्ते नाते उनसे जुड़कर खुशियाँ पाते हैं

फर्ज निभा हकदार बने जो, सबको भाते हैं।
रिश्ते नाते उनसे जुड़कर, खुशियाँ पाते हैं।।
खिले बाग के फूलों से जब, खुशबू आती है।
घर आँगन को महका जाए, तितली आती है।

प्रश्न कठिन कितना भी लगता, वो सुलझाते हैं।
मन की गाँठों को भी खोलें, तब मुसकाते हैं।।
राह स्वयं जो अपनी गढ़ते, कब शरमाते हैं।
चंदन सी खुशबू फैलाते, वो इठलाते हैं।।

बुद्धि-विवेक संग निर्णय ले, प्रगति करते हैं।
संघर्षों की अग्नि में तप वो, सोना बनते हैं।।
वर्षा की बूँदों सा देखो, हर्षित करते हैं।
धरणी सा धीरज धरकर वो, पोषण करते हैं।।

~ ~ ~

समता के हकदार यहाँ सब

समता के हकदार यहाँ सब, बिसराए जाते।
दिल के सच्चे सीधे जो हैं, उलझाए जाते।
आपस में मतभेद कराकर, भरमाए जाते।
राई को पर्वत बतलाकर, इठलाए जाते।।

लोभ और लालच के कारण, बहलाए जाते।
लक्ष्य भुला अपने पथ से वो, अलसाए जाते
मानवता का धर्म भुलाकर, भटकाए जाते।
भ्रम का जाल फैलाने वाले, अपनाए जाते।।

बल बुद्धि से जो न हारे थे, आज वही हारे।
बदली बदली हवा चली है, चढ़ते हैं पारे।।
कल तो जो थे नींव सँभाले, आज वही मारे।
सोच सोचकर डर लगता है, बिखरेंगे सारे।।

~ ~ ~

दान करो

जरूरत मंद को, सोच समझ कर,
फिर कोई भी, दान करो।

सुपात्र जो भी हों, उनका सदैव,
आगे बढ़कर, मान करो।।

अच्छे करें कर्म, उनके गुण का,
सदैव ही तुम, गान करो।

अन्नदान कर के, श्रेष्ठ भावना,
आत्म-संतुष्ट, भान करो।।

विद्या मिले दान, अनमोल रत्न,
गुरु का वंदन, ध्यान धरो।

होता है सदैव, ज्ञान का पूजन,
होता हरदम, खान धरो।।

हो जगत कल्याण, सुखकारी हैं,
ऐसे विचार, छान धरो।

मुश्किल हो जब भी, मेधा साथी,
बल और बुद्धि, आन धरो।।

शीष को नवाकर, याचक बनकर,
विद्या पाना, मान बढ़ा।

विद्या अर्जन को, शीश झुकाकर,
आशीष मिले, ज्ञान बढ़ा।।

निष्कंटक पथ हो, सफलता मिले,
कदम बढ़ाकर, खुशी मना।

प्रगतिशील जीवन, भानु की किरण,
जग आलोकित, उगी मना।।

~ ~ ~

दीपक

धीरे-धीरे जलता दीपक,
मद्धिम-मद्धिम जिसकी लौ।
अँधियारे से हर पल लड़ता,
युग-युग की कथाएँ लिखता।।

अवनी पर तारों को लाता,
चंचल मन को स्थिर कर जाता।
पथ का सदैव भान कराता,
खुद से खुद को लड़ना सिखाता।।

जीवन की अँधियारी बेला,
आशाओं के दीप जलाना।
सूरज के पहली किरणों का,
प्रमुदित होकर स्वागत करना।।

अँधियारे में परिचय खुद का,
अंतस में एक ज्योति जलाना।
जो भी कालिख फैली यहाँ पर,
प्रखर पुंज से उसको मिटाना।।

~ ~ ~

तीर्थराज प्रयाग

तीर्थ राजा कहे जो गये।
घाट धारा त्रिवेणी भये।।
हैं बुलाते चले आइये।
पाप धो पुण्य को पाइये।।

यज्ञ की है धरा पावनी।
संत बैठे लगा आसनी।।
है कथा देव की व्यापती।
भक्ति धारा बहे शाश्वती।।

कल्पवासी करें साधना।
ले खुशी की यहाँ कामना।।
पुर्णता की करें याचना।
आ रहे वो करें प्रार्थना।।

भानुजा जाह्नवी शारदा।
हो रहा मेल जो प्राणदा।।
स्नान से पुण्य-आत्मा जगी।
भावना प्रेम से जो पगी।।

जो युगों की कथाएं कहे।
चेतना शुद्ध धारा बहे।।
माघ मेला यहाँ है लगा।
शीत में उष्णता से जगा।।

~ ~ ~

मिला तभी सुराज

युवा सदा लगा रहा,
डटा रहा सुकाज में।
जला स्वयं प्रखंड वो,
मिला तभी सुराज है।।

निशा जहाँ जला सदा,
तभी हुआ उजास है।
स्वभाव स्वर्ण ज्योति का,
मिटा रहा अँधेर है।।

सुहाग माँग में सजा,
नया विहान हो गया।
खिली-खिली धरा सजी,
हमें खुशी मिली यहाँ।।

सुगंध पुष्प की यहाँ,
मिली नहीं उसे कभीं।
दिया सदा लिया नहीं,
विदा हुआ चला गया।।

~ ~ ~

करूँ वंदना आरती

प्रतिदिन ही मैं कृष्ण मुरारी,
करूँ वंदना आरती।
हृदय बसाकर छवि तुम्हारी,
प्रेम हृदय में धारती।।

मेरे दिल की हर धड़कन अब,
कान्हा तुझे पुकारती।
प्रीत हृदय में उठी तरंगें,
पथ को सदा बुहारती।।

पुजन अर्चन करती हृदय से,
आरती नित उतारती।
देरी न कर कृष्ण कन्हैया,
अरि से घिरी गुहारती।।

मोहनी मूरत को बसाकर,
पल-पल तुझे निहारती।
मंथन हृदयांगन का करती,
खुद को स्वयं निखारती।।

तुम रक्षक हो जग के पालक,
मेरे हृदय आन बसो।
नैना तुझको ही बस देखें,
चंचल मन डोरी कसो।।

मंद-मंद मुस्काओ न कान्हा,
हाथ धरो अब अंक भरो।
चिरकाल से हुई प्रतिक्षा,
कान्हा आओ ध्यान धरो।।

~ ~ ~

प्यार हमारा अमर रहेगा

साथी मेरे, प्यार हमारा, अमर रहेगा, इस जग में।
हाथ पकड़कर, साथ चलेंगे, मुश्किल हारे, हर पग में।।
कोमल है मन, प्रिय ही तन-मन, अर्पण सबकुछ, भाव भरे।
तुझसे ही बस, मेरी दुनिया, सजी हुई है, पुष्प झरे।।

इन नैनों में, चित्र बसा है, लगे मनोहर, जो चीतल।
स्वर्ण सरीखा, चमक बिखेरे, कंचन काया,अति शीतल।।
आओ प्रियतम, गीत प्रेम के, संग में गाओ, जो मधुरिम।
पिया मिलन की, सुधि बिसरे कब, प्रीति की बरखा, हो रिमझिम।।

पायल मेरी, छन-छन करती, तुझे बुलाए, नाम भजे।
दूर न जाओ, साथ रहो बस, रूप सजीला, क्यों तु तजे।।
भूल गया क्या, प्यारी कसमें, साथ लिए जो, थे हमने।
बाधाओं को, पार करेंगे, पूरे करने, हैं सपने।।

~ ~ ~

बासंती सी पवन चलती

बासन्ती सी,पवन चलती, क्यारियाँ हैं बुलाती।
खेतों में जो, फसल पकती, स्वर्ण सी है लुभाती।।
मिट्टी में है, कनक उपजा, देखता है जमाना।
बागों में है, मधुर सुन लो, कोकिला का तराना।।

साँसों की जो, स्वर लहरियाँ, आप ही को सँवारें।
शोभा भारी, हरित धरणी, प्यार के हैं नजारे।।
माता देखो, हर दिन यहाँ, ले रही है बलाएँ।
आओ देखो, चमन महका, छा गई हैं घटाएँ।।

गाना गाएँ, कृषक खुश हो, स्वप्न साजे सुहाने।
आओ देखो, सरल मन से, वो भरेंगे खजाने।।
आते सारे, मिल-जुल चलें, देख लो ये कतारें।
झूमे सारी, सुरभि घुलती, प्यार की हैं बहारें।।

~ ~ ~

मन की नदी

बहे मेरे मन की नदी धीरे-धीरे।
बहे भाव निर्झर बहे धीरे-धीरे।।
हृदय के सघन वन गहन घाटियों में।
शीतल पवन संग बहे धीरे-धीरे।।

उड़े पंछी धीरे विस्तृत गगन में।
संध्या की बेला लौटे भवन में।।
दिन की थकन को मिटाने हैं बैठे।
सुगना के संग वो मगन हैं भजन में।।

खिली जो कली मुस्कुराने लगी है।
महके हृदय वाटिका धीरे-धीरे।।
भौंरे गुनगुनाते गीत गाने लगे हैं।
सौंदर्य सुरभि बाँट रहे धीरे-धीरे।।

~ ~ ~

स्नेह का दीप

स्नेह का दीप निशिदिन जलाते रहो।
द्वेष की भावना को मिटाते रहो।।
प्रीति अनुराग से जिंदगी हो भरी।
नेह दर्पण हृदय को सजाते रहो।।

राजसी ठाठ को छोड़ बढते रहो।
युद्ध से दुश्मनों को भगाते रहो।।
विश्व कल्याण की भावना से भरे।
चित्त कौशल भरा रण सजाते रहो।।

लक्ष्य पथ पर दबे पाँव चलते रहो।
मौन रख लक्ष्य संधान करते रहो।।
भार दिल पर नहीं आपके अब रहे।
धर्म का बीज उर मध्य रखते रहो।।

~ ~ ~

जीवन के महाकाव्य का

इस जीवन के महाकाव्य का।
चित्र उकेरेंगे हम खुद ही।।
कहाँ कौन सा रंग भरेंगे।
इसका निर्णय भी खुद लेंगे।।

सहज सरल रेखा सा जीवन।
हमें कभी भी रास न आया।।
भरी चुनौती जिस पथ पर थी।
उस पथ पर ही चलना भाया।।

जब भी प्यास लगी हमको।
श्रम कर ही जीवन रस पाया।।
नहीं सुहाता मिन्नत करना।।
आत्म चेतना भाव जो पाया।।

हम गौरव रथ खुद ही खींचें।
कृष्ण स्वयं के भीतर पाकर।।
रज कण मातृभूमि का चंदन।
विजय तिलक को माथ सजाकर।।

~ ~ ~

गाता वसंत गीत

गाता वसंत गीत, झूमा जहान मीत।
नैना निहाल आज, आया बसंत राज।।
पीले खिले प्रसून, महके पराग दून।
बहती समीर मंद। फैली सुगंध नंद।।

आओ चलें विहार, खिलते कमल निहार।
गूँजा मिलिंद बाग, दस्तक सुवास फाग।।
कोयल रसाल डाल, गाती मधुर कमाल।
फागुन बयार संग, मन में उठी तरंग।।

झूले कदंब डाल, झूमा बसंत राल।
महुआ सुगंधि खास, बिखरे मही रास।।
वसुधा प्रसन्न आज, नाचा मयूर राज।
नैना निहाल देख, उमड़ा प्रमोद रेख।।

~ ~ ~

हृदय रख धैर्य जब बढ़ते

हृदय रख धैर्य जब बढ़ते।
नवल प्रतिमान नित गढ़ते।।
सुफल सब काज तुम करते।
नखत नभ मध्य ध्रुव रहते।।

जगतपति गोद तब रखते।
सहज शुभ भाव जब झरते।
करम करते नयन बसते।
उदित सविता सृजन करते।।

सुमन खिलते, सहज झरते।
मधुप बगिया, भ्रमण करते।।
कुहुक-पिक भी, चहक उठते।
हरित शुक आ, भजन करते।।

~ ~ ~

संध्या वंदन आरती

संध्या वंदन आरती, करती मैं माँ भारती।
वीणा कर में धारती, हमको तू माँ तारती।।
नित्य करूँ मैं साधना, शुद्ध करो मम भावना।
हिय में तेरा वास हो, तुझसे ही बस आस हो।।

हंस वाहिनी ज्ञानदा, मिट जाये हर आपदा।
तुझसे स्वर संधान है, चेतन का संज्ञान है।।
जड़ता मेरी हो दमन, रहना मेरे तुम सदन।
ज्ञान ज्योति तुमसे प्रखर, गुञ्जित बगिया हो भ्रमर।।

आयी मैं तेरे शरण, दुख मेरे माँ कर हरण।
वाणी में झंकार दे, गीत ग़ज़ल संस्कार दे।।
तुझसे ही सब ज्ञान हैं, वेद शास्त्र प्राचीन हैं।
मुझको भी वरदान दे, विद्या का अवदान दे।।

~ ~ ~

देश भक्ति गीत

आओ सारे, मिलजुल रहें, भारती को सँवारें।
मिथ्या का जो, जहर घुलता, सत्य से ही बुहारें।।
झण्डा ऊँचा, गगन फहरा, गा रहा शौर्य गाथा।
बाधा जो भी, हर जन लड़ा, गर्व से विश्व माथा।।

भाई-चारा, निशदिन रहे, राष्ट्र आगे बढ़ाना।
आओ प्यारे, हम सब चलें, देखता है जमाना।।
गूँजे देखो, गगन भर में, एकता का तराना।
देखें सारे, मगन सब हैं, है खुशी का खजाना।।

वीरों की है, जनपथ लगी, ढेर सारी कतारें।
आशाओं के, पँख लग रहे, आ मिटा के दरारें।।
साथी आ जा, प्रीत घुल रही, जो दिलों को मिलाए।
है तिरंगा, सब कह रहा, नाम वो जो लिखाए।।

~ ~ ~

करना पड़े उपाय

करना पड़े उपाय, सोचो हिया लगाय।
लिखना नया विहान, खोना नहीं इमान।।
सुंदर लगे जहान, पकड़ो स्वयं कमान।
चिंता करो दुराय, रहना तुझे सुखाय।।

तुझसे बने समाज, नभ में उड़े जहाज।
हिंसा कहीं न होय, तुम्हीं करो उपाय।।
कर्म मिटाते लेख, चाहे जिसे तु देख।
मीठे वचन तु बोल, बानी मिठास घोल।।

ख्याली पुलाव छोड़, रिश्ता अमूल्य जोड़।
जाता कहाँ विदेश, अपना अतुल्य देश।।
विकसित बने देश, अच्छा लगे सुदेश।
नेकी करो विचार, बनो नहीं शिकार।।

~ ~ ~

सावन प्यास जगाए

घनन-घनन घन मेघा आए, सावन प्यास जगाए।
पिया मिलन की आस लिए मन, जियरा आग लगाए।।

पाँव में पायल की रून-झुन, प्रियतम पास बुलाए।
जाने कौन घड़ी थी जिसमें, रूठे हम न मनाए।।
नैना भर जाते हैं दृगजल, यादों में खोए जाए।
बैरी पिया भूले बैठे हैं, झूला कौन झुलाए।।
पिया मिलन की आस लिए मन, जियरा आग लगाए।।

सावन बरसे झूम-झूमकर, अंबर प्रेम लुटाए।
भीगा तन-मन बरखा में, पत्थर दिल पिघलाए।।
आओ सजना पास मेरे, मन का मैल मिटाएँ।
चूड़ी कंगन बिंदिया भी, तुझको पास बुलाएँ।
पिया मिलन की आस लिए मन, जियरा आग लगाए।।

नैना देख रहे हैं दर्पण, द्वारे नज़र टिकाए।
मेंहदी का रंग गहराया, आस का दीप जलाए।।
कब आएँगे मोर पिया, दिल मेरा अब घबराए।
साँझ हो रही धीरे-धीरे, व्याकुल मन समझाए।।
पिया मिलन की आस लिए मन, जियरा आग लगाए।।

~ ~ ~

बूँदों की बौछार

बरखा का मौसम ले आया, बूँदों की बौछार।
काले-काले मेघा आए, पावस बिंदु फुहार।।

तपती धरती मुस्काई है, जलधर का सत्कार।
आग उगलता सूरज मद्धिम, शीतल चली बयार।।
चपला भी आयी अंबर में, चमक रही ज्यों आग।
मेघा गरजे अवनी हर्षित, सप्तवर्ण भूभाग।।

रंग-बिरंगे फूलों से धरणी, करती निज शृंगार।
हरित छटा वसुधा की सुंदर, भ्रमरों का गुंजार।।
नेह नीर सा न्यौछावर कर, अम्बर हुआ निहाल।
कल-कल करती नदिया बहती, लहरें रही उछाल।।

रिमझिम बरखा में मन झूमे, जलती आश मशाल।
तन-मन सबका भीग रहा है, बच्चे करें धमाल।।
पंख बिखेर मेहप्रिय आए, गाते मेघ-मल्हार।
दादुर मोर पपीहा के उर, बहती है रसधार।।

~ ~ ~

भजन

प्रभु जी सबके पालन कर्ता, भर दें जीवन प्राण।
एक झलक जो मिल जाए तो, हो सबका कल्याण।
जीवन मरण का चक्र छुटता, मिल जाता निर्वाण।
विपदा घोर बहुत आयी है, हृदय हुए पाषाण।।

माँ से ममता रूठ गई है, कैसे मिले अब त्राण।
रक्षक ही भक्षक बन बैठा, अधर सभी के प्राण।।
उलटी चाल सभी की अब तो, भ्रम का फैला जाल।
शीतल बहती पवन खो गई, रौशन नहीं मशाल।।

चरण कमल में शीश नवाकर, माँग रही मैं दान।
जब तुम सा है दानी प्रभु जी, कहाँ घटेगा मान।।
सूनी आँखें प्रतिपल कहती, जीवन यह निष्प्राण।
वसुधा की हरियाली मिटती, हिय में चुभते बाण।।

मूरत से अब तो तुम निकलो, भर दो जीवन प्राण।
त्राहि-त्राहि सब ओर मची है, शक्ति खोए अब घ्राण।।
प्रेम कमल हिय में खिलाकर, महका दो हर डाल।।
तुमसे प्रीत लगा बैठी हूँ, रखना तुम ही ख्याल।।

~ ~ ~

परिमल प्रेम विधान

संबंधों की रीति निभाता, परिमल प्रेम विधान।
पावन रिश्ता जब जुड़ जाता, होता नया विहान।।

स्वार्थ नहीं जब उसमें रहता, मिले सुखद संसार।
बूँद-बूँद से घट भर जाता, भर जाता भंडार।।
अंतर्मन आल्हादित होता, सुंदर जब संस्कार।
सात सुरों के मिलकर जैसे, मधुरिम हो झंकार।।

रिश्तों की बगिया सुरभित हो, महक उठे कचनार।
विविध रंग के पुष्प खिलें तब, कर देते गुलजार।।
मौन शब्द जब उनके पढ़कर, कर देते उपचार।
प्रीत रंग ऐसा चढ़ जाता, मिट जाए तकरार।।

नैना सजल कह देते बातें, अधर जहाँ हों मौन।
हृदय तार जब जुड़ जाते, जान पराया कौन।।
नेह की धारा अविरल बहे, प्रीत का हो विधान।
पावन रिश्ता जब जुड़ जाता, होता नया विहान।।

राग-द्वेष सब मिट जाते हैं, जहाँ प्रेम का राज।
द्वंद अगर कोई भी मन में, दृष्टि सदा हो बाज।।
जब भी विपदा का घेरा, गिराने लगे गाज।
संबंधों के अपनेपन से, प्रीत दिला दे ताज।।

~ ~ ~

झूठे सब सपने

माया की नगरी में देखो, झूठे सब सपने।
जाल अनोखा बिछा हुआ है, खोए हैं अपने।।

रिश्तों की ओट में देखो, मनके सब छितरे।
प्रीत का डोर ही जब टूटी, अपनों पर बिफरे।।
ऐसा भी क्या मिल जाता है, अपनों को बिसरे।
हाथ थाम लो संग चलो फिर, गीत ग़ज़ल मिसरे।।

रिश्ते ही अनमोल सदा हैं, इसको रख नियरे।
खुली हवा में साँस मिले तो, तरु-पादप निखरे।।
नदिया कल-कल बहती जाती, प्यास मिटे सबकी।
बागों में जो फूल खिले तो, मधुर समीर बहकी।।

ढूँढ रहा है भ्रमर कली को, प्रीत बसा मन में।
प्रीत की रीत सदा मिटना, मोह नहीं तन में।।
प्रेम में पागल होकर पाखी, हरदम ही जलता।
तन-मन सब अर्पण करना, उसको कब खलता।

पल भर में सब माया सिमटे, मार्ग सभी खुलते।
पक्षी नीड़ों से उड़ जाते, रवि के ही उगते।।
स्वर्ण प्रभा जब खुशियाँ लाए, तब सपने चमके।
मन की कालिख धो लेने पर, धवल प्रभा दमके।।

~ ~ ~

मानस पटल कोई है आया

पावन हृदय, मेरा मुस्काया।
मानस पटल, कोई है आया।।
सुंदर कमल, जो मोहे नैना।
पुष्कर सुघर, छाए हैं रैना।।

शीतल पवन, संदेशा लाई।
सौरभ मधुर, बागों में छाई।
गीत मधुरिम, श्यामा है गाती।
आज प्रियतम, लाई है पाती।।

मोहन अधर, शोभा है प्यारी।
बाजत नुपुर, राधा जी न्यारी।
आँगन किरन, मैंने बैठाया।
शांत मन तब, आज मैंने पाया।।

देख रवि छवि, आँखों को भायी।
सागर लहर, मुक्ता को लाई।
मोहन कहत, राधा जी भायी।
कुंज मधुरिम, बंशी बजायी।।

~ ~ ~

कैसी बाधा

आज भव पर, ये कैसी बाधा।
काल बन कर, छाया है व्याधा।
दुश्मन मगन, गाता है गाना।
दोस्त बन कर, मारे वो ताना।।

जीवन मरण, का कैसा खेला।
आखिर किधर, जाएगा रेला।
हे प्रभु शरण, मैं आयी तेरे।
कष्ट हर अब, आशा के फेरे।।

शांत मन अब, कैसे मैं पाऊँ।
पाकर वरद, मैं नाचूँ गाऊँ।।
दीप्त कर अब, जो भी अंधेरे।।
काट शिव अब, आशा के फेरे।

क्लेश हर अब, भोला भण्डारी।
देख अब शिव, आयी संसारी।।
हास मत कर, ज्यों अत्याचारी।
द्वार शिवगण, की चौकीदारी।।

~ ~ ~

नव भोर

नव भोर हुई किरणें बिखरी।
बुझती तब है घर की ढिबरी।
वह मध्दिम लौ निशि में जलती।
करती उजियार सदा रहती।।

जब वो जलती अँधियार छँटे।
मन आस रहे तम रैन मिटे।
शुभ दीप हिया जब भी जलते।
तब सुंदर जीवन वो करते।।

कलियाँ-चँटकी नव पुष्प खिलें।
खग-वृंद सभी हिय देख मिलें।।
सुख से रहते सब साथ जहाँ।
शुभता करती नित वास वहाँ।।

यह जीवन है किस अर्थ बता।
खुद की पहचान खुदी करता।।
शुभ-भाव मन विश्वास जगा।।
नभ स्वर्णिम रोज विहान पगा।।

~ ~ ~

छा गया कोहरा

छा गया कोहरा चारों तरफ,
पिघल गयी शृंग की है बरफ़।
जरूरी नहीं कपड़े हों कलफ़,
काँपते से लग रहे हैं हरफ़।।

छिप गई है सूरज की किरण,
कंदराओं में गया अब हिरण।
सुप्त जीव हैं चेतना का क्षरण,
अग्नि के ही गए सब शरण।।

मौसम ही बन गया है जेलर,
मुश्किलें बढ़ी जो हुए बेघर।
वस्त्र ऊनी कोट भाए स्वेटर,
खिली गई क्यारी अब केसर।।

बाग में खिले पुष्प हैं अनेक,
भावना रखना सदा ही नेक।
दे रहे हैं खुशियों का संदेश,
फैल रही है सुगंध विशेस।।

~ ~ ~

स्वर्णिम भोर

प्रभात बेला की स्वर्णिम भोर,
छा गई है किरण चारों ओर।
मन चंचल हुआ देखकर अँजोर,
चहकी चिड़िया हुआ फिर विभोर।।

लेखनी अब चली भरने रंग,
कोरे कागज़ पर जीवन ढंग।
आ गए जो नभ उड़ते विहंग,
मन के आकाश में इक तरंग।।

जला रहे सर्दियों में अलाव,
धमनियो में न हो रक्त जमाव।
आग खेलो नहीं रखो दुराव,
दुर्घटना से तु करना बचाव।।

चल रही बाग में सुंदर पवन,
घंटियां हैं बजी हो रहे भजन।
देखकर मुग्ध हैं बैठे भवन,
खिली धूप छँटा कोहरा सघन।।

~ ~ ~

राधिका का हृदय

राधिका का हृदय कृष्ण को जानता।
माधुरी बाँसुरी तान पर नाचता।।
प्रेम की पूर्णता चाहतें लाँघता।
शरद की पूर्णिमा चाँद ज्यों झाँकता।।

रास से जो सजी मधुवनी पावनी।
सृष्टि में घुल रही प्रीत की चाशनी।।
पुलक है ये धरा झूमती कामिनी।
देवता आ गए रूप ले लावणी।।

कामना बस यही प्रीति में डूबना।
कृष्ण के प्रेम में आज है झूमना।।
प्रेम में कृष्ण के बेणी है गूँथना।
पा दरश मोहिनी नैन को मूँदना।।

गोपियाँ बावरी रास में डूबती।
खो गयी ख्याल में कृष्ण को ढूँढ़ती।।
हो तरल राधिका कृष्ण में जा मिली।
मधुवनी डाल थी पुष्प से फिर खिली।।

~ ~ ~

वसुंधरा

देख लो वसुंधरा आज है खिली खिली।
पुष्प बाग में नये रागिनी हिली-मिली।।
भोर की जहाँ पड़ी लालिमा अभी-अभी।
झूमती धरा वहाँ ला रही खुशी सभी।।

पुष्प रंग से खिले बाग हैं जहाँ-जहाँ।
छा रही सुगंध है फैलती जहाँ-तहाँ।।
भृंग घूमते हुए आ गए कली खिली।
है पराग से भरी जो यहाँ अभी लिली।।

पंथ को बुहारती है चली हवा अभी।
प्राण वायु स्वच्छता भाव को भरें सभी।।
धुंध को मिटा रही है यहाँ प्रभा जगी।।
ले रही निशा विदा प्रीति में पगी-पगी।।

~ ~ ~

वंदना माँ भारती की

वंदिता, मात है, यह धरा भारती।
पुण्य सी, भूमि यह, वीर को धारती।।
आर्य के, शौर्य को, मात है साधती।
धेनु भी, पूजिता, भावना व्यापती।।

रक्त से, जब सनी, थी लगी बेड़ियाँ।
शत्रु से, थी ठनी, चल पड़ी हस्तियाँ।।
मुक्त हो, भारती, क्रांति के ज्वाल से।
है खुशी, गर्व है, वीर के ख्याल से।।

यज्ञ की, भूमि है, मात यह श्यामला।
क्रान्ति का, पुंज है, देश का लाडला।।
गीत है, राष्ट्र का, बोल हैं बांगला।
प्राण भी, जब तजे, शान में बावला।।

देवता, आ यहाँ, गोद में खेलते।
धर्म की, स्थापना, लक्ष्य वो देखते।।
मुक्त हो, पाप से, भाव यह सोचते।
देवियाँ, मानवी, को सदा पूजते।।

शान्ति की, चाह है, विश्व का हो भला।
किन्तु है, शस्त्र ले, हाथ में वो चला।।
ज्ञान का, स्रोत है, प्रेम की खान है।
स्वर्ण का, है हृदय, शक्ति से पूर्ण है।।

~ ~ ~

सोंधी सी खुशबू

पहली बरखा के संग, सोंधी-सी खुशबू।
तन-मन को हर्षाए, मिट्टी की खशबू।।

झरझर झरती बूँदें, तन-मन शीतल करती।
व्याकुल जो अबतक, वसुधा देखो खिलती।।

सूख रहे वृक्षों पर, नव पल्लव आए।
जो लगता मुरझाए, बरखा संग खिलखिलाए।।

ताल पोखरे देखो, कैसे पानी से भर जाएँ।
टर्र टर्र करते मनभावन, दादूर मन भाएँ।।

कागज़ की नाव, बच्चों को बहुत ही भाए।
गीत मल्हार स्वयं ही, कृषक मोद में गाए।।

नदियों का यौवन, भर भर कर लहराया।
आशा के दीपों से, भीगा मन सहराया।।

~ ~ ~

सावन में

कहो तो चलें भीग लें सावन में।
बेखबर होकर भीग लें हम भी।।

हो रही है बरखा झूमा है सावन।
तेरे साथ प्रीत से भींगें हम भी।।

धरा चूमने को उतर आया बादल।
प्रेम बर्षा के मोती बिखेरें हम भी।।

न कोई शिकायत न गिला हो कोई।
तेरे संग सुहानी रात बिताएं हम भी।।

कोरा दिल हमारा तस्वीर हो तेरी।
नयन सजीले सपने सजाएं हम भी।।

बरखा में भीगे जैसे धरा हरियाली।
मन के सागर की बूँदें संजोएं हम भी।।

बरसती बूँदें ह्रदय में हलचल मचाती।
तपिश दिल के कोने की मिटाएं हम भी।।

~ ~ ~

हे! विधाता

करूँ हे! विधाता सदा ध्यान तेरा।
भरो ज्ञान अंतस छँटे धुंध घेरा।।
तु ही तो सखा है चले संग मेरे।
धरूँ पाँव सत्पथ मिटे सब अँधेरे।।

जलाऊँ दिये मैं हृदय में बसाऊँ।
प्रखर ज्योति आशा निराशा भगाऊँ।।
तु गोविन्द गोपाल आ जा पुकारूँ।।
तरसते नयन हैं तुझे ही निहारूँ।।

बनो सारथी आज रण फिर छिड़ा है।
धरूँ धीर मन में विपक्षी खड़ा है।।
करूँ लक्ष्य संधान बैरी गिराऊँ।
बजे शौर्य डंका स्वयं को रिझाऊँ।।

खड़े जो लिए शस्त्र उनको हराऊँ।
सदा धर्म रक्षा सभी को जगाऊँ।।
करूँ अंत रिपु का रचूँ शौर्य गाथा।
नहीं भय रहेगा तभी सौख्य माथा।।

~ ~ ~

भूले तराने

चले तुम गए, दे के बहाने।
जले दिल कहीं, भूले तराने।।
सजा कर दिया, तुम्हें बुझाने।
भुला कर सभी, वादे पुराने।।

मिले हम जहाँ, सोचूँ जमाने।
नहीं अब रहे, जो थे बखाने।।
कहाँ गुम हुआ, साथी रुलाके।
भरे नयन के, आँसू पराए।।

कली कुसुम की, भौंरा खँगाले।
धरा महकती, था वो सँभाले।।
मिले गगन सा, बाहें पसारे।।
खुशी मिलन की, जो वो पधारे।।

~ ~ ~

राष्ट्रभाषा की माँग है हिन्दी

कश्मीर से कन्याकुमारी तक जो बोली समझी जाती है।
वो तो हमारी हिन्दी है भारत माँ की लाडली है।।
राजभाषा अपनी हिन्दी है भारत की इससे पहचान।
थोड़ा खुद पर गर्व करो निज भाषा से ही है सम्मान।।

अंग्रेजी के पीछे यूँ ही कब तक चलते जाओगे।
मातृभाषा हिन्दी से ही खुद विकास कर पाओगे।।
धरती अम्बर तक जो गूँजे ऐसी प्यारी हिन्दी है।
भारत के जनमानस को समझती मीठी वाणी है।।

जीवन के मंत्रों को समेटे हर अक्षर अपने आप विशेष।
जितना डूबोगे उतना पाओगे सागर से रत्न अशेष।।
निज भाषा उन्नति से ही उन्नत होगा अपना देश।
दुनिया को अब दे दो राष्ट्रभाषा हिन्दी का संदेश।।

~ ~ ~

करो कुछ काम

करो कुछ काम मिले कुछ दाम।
चढ़ो नित श्रेष्ठ गुणी कर नाम।।
यहाँ किस हेतु लगा दिन-रात।
जलाकर ज्योति बढ़ो तुम ख्यात।।

लगे जब प्यास मिले तब व्यास।
भजो प्रभु नाम कटे सब त्रास।।
डरो मत आज मिले जब राम।
कहो मन की मिलते जब श्याम।।
चलो पथ संग मढ़ो निज नाम।।

बनें सब काज गढ़ो निज पंथ।
लिखो रज पत्र रचो इक ग्रंथ।।
सजा धरणी बनके इक संत।
करो अरि अंत बनो तुम कंत।।

मिली जब गंग खुशी परवान।
सदा सम भाव रखे दिनमान।।
बढे निज राह मिले यशगान।
तजें निज स्वार्थ करे विषपान।।

~ ~ ~

पर्यावरण सुरक्षा

पर्यावरण बचाना, हम सबका कर्तव्य।
लगे नीम और आम, हमारा यह मंतव्य।।
पेड़ों से छाँव मिले, भोजन से मिलती तृप्ति।
धरा हो सुरभित सदा, यही तो है गंतव्य।।

वसुधा का आनंद, वृक्ष रहें सानंद।
बागों में गूंजें भ्रमर, पुष्प जहाँ मकरंद।
प्रकृति का है सौंदर्य, हरे-भरे हों जंगल।
पक्षी करें किलोल, सभी को दें आनंद।।

जल का न हो न्यूनता, कर जल का संरक्षण।
तालाब और पोखर, प्रदूषण का संवरण।
खिलते कमल तालाब, लाये धरा संदेश।
मही उपजाए स्वर्ण, जब बहते हैं श्रमकण।।

~ ~ ~

झूला

झूला झूलें, नील गगन।
राधा रानी, आज मगन।।
सुगंध फैली, शीतल पवन।
बाग खुशियाँ, राज भवन।।

अमिया डाली, भृंग चमन।
प्रसून करते, रोज़ नमन।।
आया सावन, दूर अगन।
कान्हा मोरे, लगी लगन।।

मीरा गाती, श्याम भजन।।
आओ प्यारे, मोर सजन।
नैना भाए, हरित वसन।
कृष्ण बिहारी, भोग दसन।।

~ ~ ~

छोड़ा हमने जब गाँव को

छोड़ा हमने जब गाँव को।
पीपल-बरगद की छाँव को।।
छोड़ा अपनी पहचान को।
निश्छल अपनी मुस्कान को।।

छूटे बचपन के मीत हैं।
बिखरे मोती से गीत हैं।।
दोस्त वो लगते अतीत हैं।
जो लगते, कभीं अजीज हैं।।

धुँधला गगन का छोर है।
ढीली रिश्तों की डोर है।।
सहमे बागों में फूल हैं।।
चुभते शब्दों के शूल हैं।

दिल में रहती जो आस है।
मंजिल तो अपनी खास है।।
हममें भी कुछ तो बात है।
शीतल बहती अब वात है।।

आती जीवन में प्रात है।
बीते अंधेरी रात है।।
मधुरिम जीवन का गान है।
जब तक प्रभु का ध्यान है।।

~ ~ ~

जब भी कोई श्रृंगार करूँ

जब भी कोई श्रृंगार करूँ
थोड़ा सा शरमाती हूँ
ऐसा लगता है कि जैसे
तुमने आकर अंक भरा
सिहरन तन में उठती है
मन व्याकुल इत-उत फिरता

चुपके-चुपके तुमने आकर
मन में डाला अपना डेरा
तुमसे ही अब खुशियाँ सारी
प्रीत तुम्हीं हो रीत तुम्हीं हो
तुमसे ही अब दिल की धड़कन

जब भी तुमको न देखूँ
चैन नहीं मुझको मिलता
दूर जो मुझसे तुम होते हो
चलचित्र तुम्हारे देखूँ जब
नैनन को तब सुख मिलता

~ ~ ~

बदल रहा है जमाना

सच कहना ही डराना, बदल रहा है जमाना।
बिसर गयी है बसाना, घर जिसको था सजाना।।
अब चढ़ता रोज पारा, दिल उनसे आज खारा।।
कब किसको कौन प्यारा, दिल लगता है न म्हारा।

बिसर गयी मीठ बोली, अब सजती है न टोली।
जब चलते संग साथी, तब छिपते मस्त हाथी।।
दिल जिससे रोज बातें, गुप-चुप बीती न रातें।
कल उनसे रोज बातें, अब लगती सून रातें।।

नृप करता सेंधमारी, कब तक हो देनदारी।
कुछ करती मात घातें, तब बनती वो कुमातें।
जब तक धागे की जमातें, निकल रही सूत कातें।।
कलियुग का आज घेरा, जब करता काल फेरा।।

~ ~ ~

रक्षाबंधन

रिश्तों को मजबूत बनाने।
आई हूँ रक्षाबंधन में।।
थाल सजाकर राखी से।
जो खींचे यम को रंधन में।।

विजय सुनिश्चित करने आयी।
माथे पर अक्षत-रोली से।।
स्नेह प्रेम की वर्षा लायी।
निज आँचल की झोली से।।

हृदय प्रेम का दीप जलाने।
मीठी यादों के स्पंदन से।।
संग-संग अपना बचपन बीता।
घर महका था उर चंदन से।।

दुख की छाया कभी न आए।
करूँ प्रार्थना रघुनंदन से।।
खुशियों की बेला यह सुंदर।
मन हर्षित है अभिनंदन से।।

~ ~ ~

प्रिय की पाती

हाथ लिए मैं प्रिय की पाती,
अक्षर-अक्षर बाँच रही हूँ।
साथ में भेजा चूड़ी-कंगन,
उनको मैं निहार रही हूँ।।

दूर देश में बैठा साजन,
उसको भी मेरी याद सताए।
मेरे कानों का कुंडल झूमे,
चम-चम बिंदिया याद दिलाए।।

नैनों में वो मेरे बसा है,
इस पाती में ढूंढ़ रही हूँ।
दिन तो बीत भी जाता है,
रातें लगती बहुत ही भारी।।

शब्द शब्द में भाव छुपे हैं,
उनको मैं खुद गढ़ रही हूँ।
होठों पर मुस्कान है छाई,
प्रियवर की जो पाती आई।।

जल्दी ही वो घर आएगा,
संदेशा उसने लिख भेजा।
उससे मैं कब दूर रही हूँ,
उसने दिल में है बिठाया।।

~ ~ ~

विदाई

एक पल में ही सारे रिश्ते छूटे
टूट गये हों जैसे सारे बंधन
डोली विदा हो रही घर से
दीवारों ने भरी सिसकियाँ

सूख गयी सब फूलों की लड़ियाँ
मन भी जैसे मुरझाया सबका
कुछ पल को सबने याद किया
फिर रम गए सब अपनी रवानी

डोली पहुँची ससुराल में जब
गृहप्रवेश किया लक्ष्मी बन
सुख सौभाग्य की बरसात लायी
नयी नवेली दुल्हन बनी अन्नपूर्णा

भीड़ हटी जब थोड़ा सुस्ताया
माँ बाबा की याद में अश्रु बहे
भाई बहन का स्नेह जब सताया
देवर ननद ने प्यार लुटाया

कुछ दिन ही तो बीते थे अभी
अपनों ने ही जैसे उसे भुलाया
करती शिकायत किससे वो
बचपन से ही जब थी वो परायी

माँ बाबा की हिदायत सुनकर
गरल सदा पी जाती थी वो

प्यारा सा पति उसने पाया
भोले का उसके मन भाया
शिव पार्वती सम उनकी जोड़ी
सृजन पथ पर संग चलना भाया

~ ~ ~

पैसा बोलता है

यह सच है इस दुनिया में पैसा बोलता है,
सबको अपने इशारों पर नचाया करता है।
कभीं आँखों में चमक सुनहरी लाए पैसा,
मायूसी की चादर को पैसा हटाया करता।।

स्वाभिमान का जीवन पैसे से मिल जाता,
जेब में गर पैसा है दुनिया लगती मुठ्ठी में।
लेन देन का एक जरिया है पैसा बोलता है,
जन्म से लेकर मृत्यु तक पैसा बोला करता।।

बड़े बड़े कारखाने हों या कोई छोटी दुकान,
पैसा ही एक है जिसकी बातें कोई न टाले।
दुनियादारी की बात हो या कोई भी व्यापार,
पैसे से हर काम है, सच है पैसा बोलता है।।

~ ~ ~

राष्ट्र भाषा की अधिकारी हिंदी

हिंदी भारत की गौरव-गाथा कहती।
हिंदी स्वाभिमान का भाव जगाती।।
विश्व-पटल पर हिंदी भाषा ही तो।
हमारे भारत की पहचान कराती।।

हमारी संस्कृति और संस्कार हिंदी।
पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण में हिंदी।।
भारत के जन-जन की मीठी बोली।
हमारे देश की राजभाषा है हिन्दी।।

सम्मान करो अभिमान करो तुम।
निज भाषा का गौरव गान करो तुम।।
निज भाषा उन्नतिपथ पर ले जाती।
साहित्य का इसके मनन करो तुम।।

समृद्ध है जिसका साहित्य सदा ही।
वैज्ञानिकता से परिपूर्ण हिन्दी ही।।
सूर तुलसी कबीर निराला की वाणी।
राष्ट्र भाषा की अधिकारी हिंदी ही।।

आओ चलो संकल्प करें मिलकर हम।
हिंदी दिवस पर हिंदी साहित्य रचें हम।।
राष्ट्रभाषा का ताज हिंदी को पहनाएं।
मातृभाषा का श्रृंगार करें मिलकर हम।।

~ ~ ~

स्वयं को जान लेना

स्वयं को जान लेना ही
जरूरत आज की समझो
मोहब्बत एक धोखा है
हकीकत और होती है

नहीं दिन आज समर्पण के
जान को तुम मिटाओगे
लुटाया दिल जो तुमने तो
छत्तीस टुकड़े होते हैं

स्वयं से प्रेम करना तुम
अपनों के लिए जीना
जो संग बचपन के साथी हैं
वही सच्चे सखा होते

जिनकी छाया में यह जीवन
उन्हीं से यह सुरक्षित है
जड़ अपनी जो काटोगे
छाया भी न पाओगे

ज़रा चेतो ज़रा सम्भलो
मृग मरीचिका भरा जीवन
जो दौड़ोगे बिन मकसद
बूंद पानी को तरसोगे

~ ~ ~

मानव तन की महिमा

मानव तन जो तोहे मिला है इसकी महिमा अपार,
धर्म-कर्म का बोध करे तु जीवन का एक सार।
बुद्धि-विवेक से काज करे हो सत्-असत् का ज्ञान,
जागृत हो अब तो कर ले तु परमात्मा का ध्यान।।

देवों में भी विवेक नहीं है नित करते बस भोग,
मानव तन जो पाया तुने कर सत्संगी का जोग।
परमात्मा का अंश है तु कर जड़-चेतन में भेद,
मन-बुद्धि चेतन स्वरूप है इंद्रियाँ भोगें भोग।।

कर्म, ज्ञान और भक्ति ही बस तेरे कल्याण के योग,
लौकिक साधन मात्र तेरे कर्म और ज्ञान के योग।
भक्ति से ही बस मिलते हैं उत्तम पुरुष भगवान,
वर्ण तेरा जो कर्म चुन ले कर्म ही तेरा बनेगा योग।।

~ ~ ~

कंगाली

महँगाई बढ़ी, जानता कौन,
कब जाएगी, कंगाली।
बेरोज़गार हैं, चाह नौकरी,
डिग्री अपनी, सम्भाली।।

बटुआ है खाली, खर्चे भारी,
कर्ज बढ़ गया, तन्हाई।
विपत्ति जब आयी, साथी बिछड़े,
हुई तबाही, सच्चाई।।

घर से जब निकले, सभी अकेले,
हँसना-रोना, सब भूले।
खाना-पीना भी, समय नहीं है,
पिज्जा-बर्गर, में फूले।।

सोशल नेटवर्क, आज बढ़ रहा,
मोबाइल में, सभी यहाँ।
माया नगरी में, फैली माया,
हुए अचंभित, मिटा निशाँ।।

~ ~ ~

यह जीवन उपहार

हमें मिला अनमोल है, यह जीवन उपहार।
करना हमको है सदा, जीवन यह गुलज़ार।।

समय सदा गतिशील है, चलना इसका काम।
जो इसको पहचान ले, उसको मिलता दाम।।

साँसे सीमित मिली हैं, सबका निश्चित कर्म।
पूरित करना कर्म ही, हम सब का है धर्म।।

भूल गया इंसान क्यों, करता नहीं है शर्म।
जाति-पाति से है बड़ा, मानवता का धर्म।।

परहित में लुटना नहीं, सीख आज की मांग।
गाँधी अकेले कब रहे, झूठा है यह स्वांग।।

कलियुग में हैं घूमते, दानव बनकर मानव।
रक्षा करना स्वयं की, मिलें तभी राघव।।

सकल विश्व कल्याण हो, यही धर्म का मर्म।।
सबका कर्म विशेष है, करना उसक धर्म।।

~ ~ ~

मुझको दिया संवार

विद्या का दें दान गुरु, तुल्य सदा भगवान।
जीवन के संघर्षों में, जीना हो आसान।।

मेधा और विवेक से, देते सच का ज्ञान।
खुद तो फकीर बन रहें, हमें नृप वरदान।।

गुरु का जब हो साथ, जीवन में उत्थान।
गुरु से शिक्षा पाकर, नरेंद्र बने महान।।

गुरु की दिव्यता ऐसी, प्रकाशित हो ज़हान।
जब जब भटका मैं कहीं, गुरु दिलाएं ध्यान।।

लक्ष्य एक साधने को, प्रयत्न किया हर बार।
कच्ची मिट्टी का घड़ा, मुझको दिया संवार।।

दीपक से जलते सदा, उन गुरु को आभार।
जिनसे जीवन में मिला, हमें आज आधार।।

~ ~ ~

संतानों ने ऐश में

संतानों ने ऐश में, भुला दिए संस्कार।
अपनी संस्कृति का नहीं, करते वो सत्कार।।

उलझी सी है जिंदगी, बनते हैं उस्ताद।
सही-गलत को भूलते, जेहन में उन्माद।।

धन दौलत बर्बाद कर, मना रहे वो जश्न।
कौन सुधारेगा भला, खड्ग हुआ है प्रश्न।।

मनमर्जी में आप ही, करते बस ऐलान।।
मात-पिता और गुरुजन, देख हुए हैरान।

सिगरेट औ शराब में, खुद को करते राख।
नशे ने ऐसा जकड्ग, गिरा रहे वो साख।।

~ ~ ~

करवा चौथ

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी, करवा का त्योहार।
अपने सुहाग की रक्षा, व्रत अपनाए नार।।

निराहार रहकर करे, पूरे दिन उपवास।
चन्द्र देव दर्शन करें, श्रद्धा और विश्वास।।

करवा पूजन करे, यही धर्म सनातन।
छलनी में देखे स्वामी, व्रत करने पूरन।।

प्यार और विश्वास से, भरा हुआ त्योहार।
रिश्ते मधुर नेह के, सुखी बने संसार।।

पाती वर सौभाग्य का, अखण्ड रहे सुहाग।
सोलह श्रृंगार में सजे, स्त्री का जागे भाग।।

~ ~ ~

माघ माह के कुछ दोहे

माघ माह की पूर्णिमा, सजा त्रिवेणी घाट।
महाकुम्भ की भीड़ में, समरसता की बाट।।

आता बारह वर्ष में, महाकुम्भ का पर्व।
पावन पुण्य प्रयाग है, जिसपर हमको गर्व।।

गंगा, यमुना, सरस्वती, माघ मास सब कंत।
सत्य सनातन धर्म है, जिसका नहीं है अंत।

एक माह का कल्पवास, करता संत समाज।
आध्यात्म चिंतन होता, यहाँ सच्चा सुराज।।

नागा साधु संतों से, शोभित संगम घाट।
कोटि-कोटि श्रद्धालु हैं, नहीं किसी के ठाट।।

साधु संतों की नगरी, भीड़ त्रिवेणी घाट।
देश विदेश में कौतुहल, सजा यहाँ पर हाट।।

~ ~ ~